# सहारा बनने का लक्ष्य

(बचपन की यादों में)

442

गर्मी का मौसम था। नीरज करीब तीस साल का हो गया था। उसका जन्मदिन था। वह अपने बच्चों के साथ खेलते-खेलते अपने बचपन की यादों में खो गया। वह अपने दादा-दादी, पापा-मम्मी के बारे में सोचते ही रह गया। अपनी दादीजी का निस्वार्थ प्यार, दादा-जी का उसके साथ साईकिल में घूमना, पिता-जी की डाँटने की शैली और माता जी का अनमोल प्यार। वह ऐसे सोचते-सोचते रह गया। एक हादसे के दौरान नीरज के पिता और माता मर चुके थे। और नीरज की देखभाल सिर्फ उसके दादा जी और दादी जी करती थी। उनके वजह से ही नीरज अभी तरक्कियों की ऊँचाई छू रहा है। नीरज रामगढ़ गाँव में खुशी-खुशी से रहता था। नीरज ने पच्चीसवें साल में ही शादी कर ली थी। अब तो तीन मंजिले वाली फ्लैट में रहता है।

शादी के बाद उसके दो बच्चे हुए एक दो साल का लड़का और एक तीन साल की लड़की। पत्नी बहुत ही मॉडर्न थी। ऐसे चिंता करते हुए उसे अपने दादा और दादीजी का स्मरण आया। बचपन की यादों ने नीरज को अपने कर्तव्यों का बोध दिलाया।

उसने यह ठान के अपना मन बना लिया की "मुझे अब मेरी दादी और दादाजी को घर वापिस लाना है। क्योंकि उन्होंने मुझे इतना प्यार दिया था क्यों न मैं उनके भी इस अवस्था में उनका सहारा बनूँ"। उसने अपना विचार अपनी पत्नी से कहा, उसका यह विचार सुनकर उसकी पत्नी क्रोधित बन उठी, पत्नी ने बोला की 'अरे! तुम ऐसा काम क्यों कर रहे हो तुम उस गंदे गाँव में जाओगे जो पूरी मिट्टी से भरा पड़ा है और वहाँ के घरों में इतनी दुर्गंध आती है की वहाँ की अवस्था सोच के ही मुझे अटपटा लगता है' आखिर तुम्हारी समस्या

क्या है ? मैं और मेरे बच्चे तुम्हारे लिए काफि नही है क्या, खुशी के लिए ? । नीरज ने कुछ नही बोला क्योंकि वह जानता था की अपनी पत्नी से लड़ाई करकर कुछ परिहार नहीं मिलने वाला अगर मुझे कुछ करना ही है तो मुझे अपने दम पर करना पड़ेगा। फिर वह उस रामगढ़ गाँव की ओर चल पड़ा। उसकी पत्नी इस निर्णय से क्रोधित थी। नीरज ने अपनी पत्नी की बातों को नजरंदाज़ किया और आगे बढ़ा।

गाँव में पहुँचते ही उसे उस मिट्टी की खुशबू मिली जिसमें उसका नाता जुड़ा हुआ था और वहाँ के पशु-पक्षियाँ कितने खुशी से नाच, गा रहे थे ऐसा खुशी का नज़ारा शहर मे कहाँ मिलता ~~सिर्फ~~ सिवाए धूल-मिट्टी के। उसको ऐसा लग रहा था की कोई उसे ~~प्रकृ~~ पुकार रहा था और पुकारती वह पुकारती माँ थी प्रकृतिमाँ, प्रकृतिमाँ उसको ऐसे पुकार रही थी जैसे कोई आनंद का मेला चल रहा हो और उस मेले में ही प्रकृति माँ सबको आमंत्रित कर रही थी की आओ मेरे धुन में रंग जाओ।

ऐसा प्रकृति का नज़ारा देखकर वह अपने घर की ओर बढ़ा, उसके घर के के बाहर उसकी दादी जी और दादा जी खड़े थे वह काम कर रहे थे। ऐसा दृश्य देखकर वह चौंक उठा और अपने दादाजी और दादी जी को दिल से गले लगाया। दादीजी चौंक गयी थी क्योंकि एक अजनबी इंसान ~~अन्दे~~ अन्दे गले लगा रहा था। दादी जी ने पूछा 'अरे! क्यों तुम मुझे गले लगा ~~रहे~~ हो, तुम तो मेरे चुन्नु जैसे लग रहे हो।' ~~यह सुनकर उस~~ दादी जी की आवाज़ सुनकर उसके कानों को थोड़ा सुकून मिला और वह खुशी से कहने लगा 'हाँ, दादी

मैं आपका चुन्नु हूँ।' दादी जी ने बोला 'तुम कितने बड़े हो गये हो और कितने बदल चुके हो मुझे तो अब तक समझ नहीं आया की तुमने ~~मुझे~~ हम दोनों को छोड़ा क्यों, हम दिन रात तुमहारी बाते करते, हम यहाँ कितनी मुश्किल से जीवन यापन करते हैं। जब तुम हमें छोड़ के चले गये थे हम ने सोचा की अब हमारा कोई इस दुनिया में नहीं बचा। हम कितने बूढ़े हो गये हैं फिर भी हम तुम्हें दिन रात देखते रहते कि तुम कब आओगे हमेशा मे बाहर की लाइट रात में नहीं बुझाती क्योंकि मुझे मालूम है कि तुम हमें लेने जरूर आओगे।'

ऐसा सब सुनकर नीरज टूट पड़ा और रोने लगा। और अपनी दादीजी को और दादाजी को जम से झप्पी लगाई। ~~उसने व~~ उसने अपने बच्चों और अपनी पत्नी के बारे में सब उन लोगों से कहा। वह दोनों खुश हो गये ~~कि हमा~~ यह सोचके की हमारे परपोते भी आ गये हैं। नीरज ने फिर फैसला किया की दादा और दादाजी को अपने घर लेजाने का। इस फैसले से उसकी पत्नी नियशा भी पर धीरे-धीरे वह भी उन दोनों के प्यार में बस गई अब नीरज को अपना ~~नीरज~~ जन्मदिन का तोहफा भी मिल गया और जीवनभर केलिए प्यार भी उन दोनों के सानिध्य में बच्चे भी अच्छे संस्कार से आगे बढ़ रहे थे। और ~~अभी~~ नीरज की पत्नी भी खुशहाली में रहती है और वह हमेशा उन दोनों की सेवा करती है। अब वह परिवार अपना जीवन खुशी से यापन करता है। नीरज

नीरज ने सोचा की क्यों ने मैं एक ब्रृद्धसदन शुरू करूँ जिसमें मैं अपने परिवार का नाम डालूं ऐसा करके उसने एक स्थापन डाला और उसमें कई लोग जुड़े उसमें अभी लगभग आठ ~~ब्रृद्ध~~ ~~ब्रृद्धजन~~ ~~ब्रृ~~ बूढ़े लोग हैं। इस ब्रृद्धसदन का उद्घाटन उसके दादा जी और दादी जी ने किया। अब वह सुखमय जीवन ~~व~~ यापन करते हैं दुवाओं के साथ...

(सीख: मैं इस कहानी के द्वारा आपको कहना चाहती हूँ की अभी ~~ह~~ बूढ़े लोगों को ध्यान नहीं रखा जाता है क्यों न हम उन बाधाओं को पार करें और उनके इस अवस्था में उनका सहारा बने। यह हमारा कर्तव्य है, इसे न भूलें।)